thearyasamaj.org

Date of Publication: 25 April 2014

कमल ज्योति

(मासिक पत्र)

वर्ष-8, अंक-2 मई 2014 विक्रमी संवत् 2071 सृष्टि संवत् 1960853113 एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये सहयोग राशि 1100/-रुपये

ओ३म्

संस्थापक

भजनप्रकाश आर्य

संरक्षक

ओमप्रकाश हसीजा

प्रधान सम्पादक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
चलभाष : 9810084806

सम्पादक

एल.आर. आहूजा
आचार्य शिव नारायण शास्त्री
अतुल आर्य
चलभाष : 9718194653
दूरभाष : 011-27017780

सहयोगी सम्पादक

प्रिंसीपल हर्ष आर्या
चलभाष : 9999114012
राजीव आर्य
चलभाष : 9212209044
नरेन्द्र आर्य 'सुमन'
चलभाष : 9213402628

प्रभु के बुद्धियोग से जीवन-यज्ञ में सफलता

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन।
स धीनां योगमिन्वति॥ ऋ. 1.18.7

ऋषिः-**काण्वो मेधातिथिः॥** देवता-**सदसस्पतिः॥** छन्दः-**गायत्री॥**

शब्दार्थ- यस्मात् ऋते=जिस प्रकाशक प्रभु के बिना **विपश्चितः चन**=बड़े-बड़े बुद्धिमान्, विद्वानों का भी **यज्ञः**=यज्ञ **न सिध्यति**=सिद्ध नहीं होता **सः**=वह प्रभु **धीनां योगं इन्वति**=बुद्धियों के योग में व्याप्त हो जाता है।

विनयः हममें से बहुत-से लोगों को अपनी विद्वत्ता का-अपनी बुद्धि का, बहुत अधिक अभिमान होता है। वे समझते हैं कि वे अपनी विद्वत्ता व चतुराई के बल पर प्रत्येक कार्य में सिद्धि पा लेंगे। उनहें अपने बुद्धि-बल के सामने कुछ भी दुःसाध्य नहीं दिखता, परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं कि बहुत बार उन्हें जिन कार्यों में सफलता मिलती है, वह इसलिए मिलती है कि अचानक उस विषय में उनकी समझ (बुद्धि) प्रभु के बुद्धियोग के अनुकूल (जान-बूझकर अनुकूल होती है या अचानक) होती है तब हमें दीखता है कि हमारी बुद्धि से किया कार्य सफल हो गया, परन्तु अचानक हुई अनुकूलता के कारण हमें अपनी सफलता का जो अभिमान हो जाता है, वह सर्वथा मिथ्या होता है। वह हमें केवल धोखे में रखने का कारण बनता है और कुछ नहीं, परन्तु जो जानबूझकर प्राप्त की गई अनुकूलता होती है वही सच्ची है। यदि मनुष्य अपने कार्यों की सिद्धि चाहता है-अपने कार्यों को सफल-यज्ञ बनाना चाहता है, तो उसे यत्नपूर्वक अपनी बुद्धि को प्रभु से मिलाना चाहिए, अपनी बुद्धि का प्रभु में योग करना चाहिए। हमारी बुद्धि प्रभु से युक्त हो गई है-उसकी बुद्धि से जुड़ गई है या नहीं यह पूरी तरह से निर्णीत कर लेना तो हम अल्पज्ञ पुरुषों के लिए सदा सम्भव नहीं होता, हमारे लिए तो इतना ही पर्याप्त है कि हम युक्त करने का यन्त करते जाएं। प्रभु सत्यमय हैं, अतः हमारी बुद्धि सदा सत्य और न्याय के अनुकूल ही रहे (हमारे ज्ञान में जो कुछ सत्य और न्याय है, बुद्धि उसके विपरीत कोई भी निर्णय न करें) यह यत्न करना ही पर्याप्त है। हमारी बुद्धि के प्रभु से योग करने का यत्न जब परिपूर्ण हो जाता है, अर्थात् इस योग में प्रभु व्याप्त हो जाते हैं, तभी वह कार्य सिद्ध हो जाता है, अतः हमें अपनी बुद्धियों का अभिमान छोड़कर, हमारे यज्ञ-कार्य में जो बड़े प्रसिद्ध विद्वान लोग हैं उनके बुद्धिबल पर भरोसा करना छोड़कर, नम्र होकर अपनी बुद्धियों को सत्य और न्याय-तत्पर बनकर प्रभु से जोड़ने का यत्न करना चाहिए। हम चाहे कितने बुद्धिमान हों, परन्तु हमें सदा अपनी बुद्धि प्रभु से जोड़कर रखनी चाहिए। प्रभु के अधिष्ठान के बिना कोई भी यज्ञ-कार्य सफल नहीं हो सकता।

thearyasamaj.org

गतांक से आगे

सामवेद संहिता

–श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत।
शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये।।
समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम्।
देवाव्यं३ मदमभि द्विशवसम् ।।
पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये ।
यथा मित्राय वरूणाय शन्तमम् ।।807।।

आओ मित्रो मिलकर, सोम शक्ति का गान करें।
यज्ञकर्म से उसे सजायें, प्यारे बालक सम मान करें।।
सुख सम्पत्ति दिव्य गुणों का, जो है, आनन्ददाता। उसे बुलाओ
उसे मिलाओ, इन्द्रियां उसकी माता ।।
शरीर को बलवान करने हित, सोम का साधन करो।
मित्र वरूण की शक्ति पायें, ऐसा बल सम्पादन करो।।

प्र वाज्यक्षाः सहस्त्रधारस्तिरः पवित्रं वि वारमध्यम्।।
स वाज्यक्षाः सहस्त्ररेता अभ्दिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः।।
प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभियमानो श्रद्रिभिः सुतः।।808।।

परमानन्द है शक्तिशाली, कई धारा में बहता है।
अज्ञान का पर्दा काट दिया, यह मन मन्दिर में रहता है।।
विविध शक्तियों का उत्पादक, कर्मकुशलता दिखलाता।
ज्ञान की किरणों से पककर, यह रस हृदय में आता।।
भक्तजनों से सिद्ध हुआ, परमानन्द रस मन में आ।
मनःशक्ति की दिव्यगुफा, अन्तःकरण में दर्श दिखा।।

ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। ये वादः शर्यणावति।।
य आर्जोकेषु कृत्वसु से मध्ये पस्त्यानाम्। ये वा जनेषु पञ्चसु।।
ते नो वृष्टि दिवस्पति पवन्तामा सुवीर्यम्।
स्थाना देवास इन्दवः ।।809।।

परमानन्द रस जो दूर पास से, अन्तः करण में आता है।
सबके काम सरल करे, गृहीजनों में शोभा पाता है।।
दिव्य आनन्द का देने वाला, रस यह शक्ति दान करे।
प्रकाशलोक से आने वाली, सकला ज्ञान घटा से भरे।।

आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित् सधस्थात् ।
अग्ने त्वां कामये गिरा ।।
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि दिशो विश्वा अनु प्रभुः ।
समत्सु त्वा हवामहे ।।
समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे। वाजेषु चित्तराधसम् ।।810।।

हे अग्ने, यह मन मेरा, तेरा प्यारा पुत्र कहाता।
तेरे संग ही बंधा हुआ है, चाहे कहीं है आता जाता।।
ऊँचे स्थानों पर रहकर, यह भक्त आपका बना हुआ।
गीत प्रशंसा के गा-गाकर, तेरी इच्छा से सना हुआ।।
हे अग्ने तुम समदृष्टि, सब ओर से रक्षा करते हो।
संघर्षो में तेरी याद करें, सब कष्ट हमारे हरते हो।।
संघर्षो में शक्ति ज्ञान मिले, रक्षा पा उन्नति मार्ग गहें।
उस अग्नि को हम ध्यावें, सम्पत्तिशाली बने रहें।।

त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णां शतकतो विचर्षणो।
आ वीरं पृतनासहम् ।।
त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अथा ते सुम्नमीमहे ।।
त्वां शुष्मिन पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे सहस्कृत ।
स नो रास्व सुवीर्यम् ।।811।।

शतबुद्धि और कर्म के साधका, सब लोकों को देखा करते।
बल वीर्य से भर दो हम, वीर शत्रु से जीता करते।।
हे बलशाली, बलदाता इन्द्र, मन को भेद बताता हूं।
ज्ञान-शक्ति, सम्पत्तिदाता, तेरी शरण में आता हूं।।

यदिन्द्र चित्त म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः।
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर ।।
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर।
विद्याम तस्य से वयमकूपारस्य दावनः ।।
यत्ते दिक्षु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत।
तेन दृढा चिदद्रिव आ वाजं दषि सातये ।।812।।

हे ज्ञानी हे सब से ऊपर, मैं ज्ञानधन हूँ मांगता।
दान कर दोनों करों से, मैं शरण तेरी चाहता।।
हे इन्द्र तू जिसकी उन्नति चाहे, ज्ञान प्रकाश से भर दे।
संकल्परूप हो मन में रहता, मन को सुन्दर कर दे।।
तेरी विशाल प्रेरणा शक्ति, मनन की साथी बन रहती।
सभी दिशाओं में छाई, सब को तेरे गुण है कहती।।
कठिन काम करने साधक, इन्द्र, ज्ञान का भाग दो।
ज्ञान राशि के टुकड़े करके, जीवन में अनुराग दो।

शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति विप्रं मरूतो गणेन।
कविर्गीभिः काव्येन कविः सन्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्।।
ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्त्रनीथः पदवीः कवीनाम्।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप।।
चमूषच्छयं नः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्।
अपामूर्मि सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति।।813।।

प्राण एवं विचारशक्ति जगाती, सोए हुए ज्ञान को।
सोम को है सिद्ध करती, देती आनन्द महान को।।
ज्ञान-दाता वाणियों से, क्रांतद्रष्टा सोम आता।
प्रेरणा अन्तः करण में दे, मन की छलनी में समाता।।
कर्मविचार में दूर दृष्टि उत्पन्न, सुख दान करता।
शक्तिशाली सोम सोए भक्त के मन आनन्द भरता।।
गीत गाऊँ क्रांतदर्शी सोम के, प्रेम से मैं हर घड़ी।
वह स्तुति के योग्य है, उसकी की महिमा बड़ी।।
मन बुद्धि इन्द्रियों का स्वामी, पक्षी सम स्वाधीन।
सागर सम आनन्द भरा, आनन्द भोगे मन मीन।।
ज्ञान की किरणों फैलाता, गति शक्ति का दान करे।
चौथा मुक्तिधाम दिला, भक्त को आनन्दवान करे।।

[क्रमशः]

thearyasamaj.org

गतांक से आगे

जीवन-मृत्यु का चिन्तन

-डॉ. महेश विद्यालंकार

ऐसी बातें और घटनाएँ हमें प्रेरित व शिक्षित करती हैं कि पाप, अन्याय, अधर्म व गलत तरीके से कमाया धन-माल कुछ भी साथ न जायेगा। दृष्टान्तों से हमें जीवन-दृष्टि मिलती है। ऐसे सोच-विचार तथा बातों से जीवन सँभला रहता है। जिसका जीवन सँभल व सुधर गया, उसे मृत्यु डराती, धमकाती व परेशान नहीं करती है।

कथा, प्रवचन, क्रिया, श्मशान आदि से हमें मृत्यु को बार-बार याद कराया जाता है, जिससे व्यक्ति मृत्यु को कभी न भूले। प्रायः लोग मृत्यु को भूल जाते हैं। दुनियावी चक्करों, इच्छाओं, भोगों तथा चीजों में इन्सान इतना बेसुध हो जाता है कि उसे पता ही नहीं चलता कि दुर्लभ जीवन कब खत्म हो गया और कब दबे पाँव मरण आ गया। संस्कृत के एक कवि ने बड़े मार्मिक शब्दों में संसारी मानव का चित्र खींचा है-

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्,
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पक्ङजश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे,
हा! हन्त! हन्त! नलिनीं गज उज्जहार॥

लोभी भ्रमर कमल-पुष्प पर बैठा रस और गन्ध में इतना बेसुध व मस्त हो गया कि उसे पता ही न चला कि सूर्य कब अस्त हो गया। प्रकृति का नियम है कि सूर्य के उदय होने पर कमल खिलता है और अस्त होने पर बन्द हो जाता है। कमल के फूल में बन्द भ्रमर सोच रहा है-''रात बीतेगी, सवेरा होने पर सूर्य उदय होगा, कमल खिलेगा और मैं बाहर उड़ जाऊँगा।'' परन्तु उधर से जंगली हाथी आता है। कमल को जड़ से उखाड़कर खा लेता है। भौरे की जीवनलीला समाप्त हो जाती है। ऐसी ही स्थिति हम संसारी लोगों की हो रही है। हम लोग दिनरात भोग-पदार्थ व सुखों के साधन जुटाने में लगे हैं। आम आदमी सारी उम्र धन और भोगों को इकट्ठा करने में निकाल देता है। काल का झोंका आता है, सब कुछ छोड़कर जाना पड़ता है। आदमी रोता हुआ संसार में आता है और हाय! करते मर जाता है। वह संसार के भोगपदार्थों, मोह-माया में इतना पागल तथा बेसुध हो जाता है कि इच्छाओं और वासनाओं की पूर्ति में ही जीवन निकल जाता है। आम आदमी बेहोशी, नशे तथा पागलपन में जिन्दगी जीता है। उसे पता ही नहीं होता कि जीवन का मतलब क्या है। दुनिया व माया का नशा इतना भयंकर होता है कि इसमें डूबने के बाद मनुष्य अपनी सुध-बुध खो बैठता है। उठते-बैठते, सोते-जागते एक ही धुन-पैसा-पैसा, भोग, संग्रह, सामान आदि मगर....

ऐश के सामान सब पड़े रह जायेंगे।
यार तेरी लाश पर रोते खड़े रह जायेंगे॥

जन्म से पहले भी हमारे पास धन नहीं था। मरने के बाद भी हम धन साथ नहीं ले जा सकेंगे। सभी को सब कुछ यहीं छोड़कर जाना है, फिर भी हम समझ नहीं पा रहे हैं। अचानक मृत्यु का आक्रमण होता है, सब कुछ मिट जाता और जो कुछ पहले था, सब बदल जाता है।

मृत्यु अवश्यंभावी है। वह छाया की तरह सदा साथ रहती है। मनुष्य कहीं भी छिप जाये, वहीं मृत्यु उसे खोज लेती है। मृत्यु ने हमारे बालों को पकड़ रखा है, इसलिए धर्म के आचरण की सोचो। न जाने कब जीवन की शाम हो जाए। दुनिया में आदमी को मेहमान की तरह रहना चाहिए। तब उसे संसार को छोड़ते हुए दुःख नहीं होगा। यह संसार परमात्मा ने मेरे लिए बनाया है, मगर मेरा नहीं है। मैं इसका माली हूँ, मालिक नहीं। कफन में जेब नहीं होती है। अगर जेब होती तो मनुष्य न जाने क्या-क्या भरकर ले जाता। सब कमाया और एकत्र किया हुआ यहीं पड़ा रहता है-

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं॥

मृत्यु के समय धनदौलत, सम्बन्धी, परिवारिक जन आदि कोई साथ नहीं देता और न साथ जाता है। धर्म, सत्कर्म और अर्जित दानपुण्य ही साथ जाता है। मृत्यु बड़े-बड़े अहंकारी, अत्याचारी, बलवान्, राजे महाराजाओं को खाक में मिला देती है। सुना है कि सिकन्दर की माँ ने श्मशान पर जाकर धरती से पूछा-''मेरे बेटे की कब्र कहाँ है?'' आवाज़ आई-''कौन सिकन्दर?'' सिकन्दर की माँ ने बड़े गर्व से कहा कि ''तुम विश्वविजयी सिकन्दर को नहीं जानती हो?'' धरती से बड़े शान्तभाव में आवाज आती है-''ऐसे न जाने कितने सिकन्दर मेरी गोद में शान्त सोये पड़े हैं। मैं किस-किस सिकन्दर को याद करूँ?'' सिकन्दर की माँ का अहंकार चूर-चूर हो गया। मृत्यु मनुष्य के अहंकार को तोड़ती है। मृत्यु आसमान में उड़ने वाले को खाक में मिला देती है।

भारतीय चिन्तन में जीवन को फसल के समान माना गया है। जैसे फसल उगती, बढ़ती, फलती-फूलती और अन्त में सूख जाती है, फिर उसको काट लिया जाता है, ऐसे ही जीवन जन्म, बचपन, युवा, वृद्धावस्था आदि के दौर से गुजरता हुआ अन्ततः मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। शरीर प्रकृति से बना है, प्राकृतिक पदार्थों एवं नियमों से ही इसकी रक्षा होती और अन्त में इन्हीं में

thearyasamaj.org

मिल जाता है। जीवन का प्रभात बचपन, दोपहर यौवनावस्था है और शाम वृद्धावस्था है। हम जीवन का आरम्भ बड़े उत्साह, उमंग, कल्पना व स्वप्नों के साथ करते हैं। अधिकांश लोगों के जीवन का अन्त निराशा-हताशा, रोग-शोक से पूर्ण तथा चिन्ता, उपेक्षा और कष्ट में होता है।

वेद में आता है-''बुढ़ापा जवानी को सिर से खाना आरम्भ करता है।'' भाव यह है कि सिर के बाल पहले सफेद होने लगते हैं, उम्र ढलने लगती है और शरीर पकने लगता है। यह स्थिति पके हुए आम की तरह होती है। कब डाल को छोड़ दे, पता नहीं। बुढ़ापा एक मंजिल है, अगले सफर की तैयारी है। बुढ़ापा मृत्यु की घण्टी है। बुढ़ापे में व्यक्ति का आपा भी बुरा बन जाता है। अपने भी पराये हो जाते हैं। बुढ़ापे में सांसारिक उपयोगिता खत्म हो जाती है। सभी लोग भार समझने लगते हैं। बुढ़ापा ठीक गुजरे, इसकी जवानी में ही समझ व तैयारी करनी चाहिए। बुढ़ापे का भी एक सौन्दर्य व सम्मान है। ज्यों-ज्यों शरीर वृद्ध एवं शिथिल होने लगता है, त्यों-त्यों मनुष्य को मृत्यु का अहसास तथा उसका भय सताने लगता है। जीवन की अन्तिम परीक्षा मृत्यु होती है। जो इसमें सफल हो गया, उसी का जीवन सफल है। संसार में देखते हैं- कई लोगों का मृत्युकाल बड़ा अशान्त, रोगभरा तथा कष्टपूर्ण निकलता है। शरीर की उपयोगिता सुन्दरता व व्यावहारिकता न होते हुए भी इन्सान को कर्मफलभोग के अधीन समय पूरा करना पड़ता है और मजबूरी में जीना पड़ता है।

शास्त्र स्पष्ट हैं-**'नाभुक्तं श्रीयते कर्म'**, जब तक कर्मफल का भोग समाप्त नहीं होता है, तब तक प्राणी को लाचारी में ठहरना होता हे। ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती जाए, त्यों-त्यों मनुष्य को मृत्यु की तैयारी करनी चाहिए। कुछ लोगों की ऐसी भी सोच रहती है, ''मृत्यु की क्या चिन्ता करनी, जब आनी होगी आ जायेगी।'' यह उनकी भूल व अज्ञानता है। बिल्ली के भय से कबूतर आँख बन्द कर ले, तो बचाव नहीं हो जाता है। वृद्धजनों को मानसिक रूप से मृत्यु की ओर जाने का भाव जागृत करते रहना चाहिए। उससे मोहमाया, ममता, भोगपदार्थो आदि से लगाव छूटता जाता है एवं इन्सान तटस्थ होने लगता है। संसार से मन हटकर प्रभु की ओर रमने लगता है। आत्मचिन्तन और परमात्मचिन्तन से धर्म में प्रवृत्ति और बुराइयों से मनुष्य बचता है। जितना मनुष्य परमात्मा के नजदीक होता जायेगा, उतना मृत्यु से निडर हो जायेगा। कबीर ने सीधे-सादे शब्दों में कहा है-

चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में बाकी बचा न कोय॥

संसाररूपी चक्की के जन्म और मृत्यु दो पाट हैं। कभी जन्म, तो कभी मृत्यु। इससे आज तक कोई भी बच नहीं सका है। वहीं प्राणी आवागमन के चक्र से बच पाया है, जो प्रभु रूपी कीली की शरण में पहुँच गया। चक्की में वहीं दाने पिसने से बच जाते हैं जो चक्की की कीली के पास पहुँच जाते हैं। वेद का सन्देश हे-

यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

ऋ. 10.121.2

परमेश्वर का सान्निध्य ही मृत्यु के भय से छुड़ाता है। उसीकी शरण में पहुँचकर आत्मा अमृतत्व की प्राप्ति करता है। प्रभु की छात्रच्छाया में जीव को मृत्यु से लड़ने का बोध, बल एवं साहस मिलता है। तब मृत्यु भयभीत नहीं करती है।

भारतीय जीवन-दर्शन कहता है कि मृत्यु की चिन्ता मत करो, चिन्तन करो। मृत्यु जीवन की नित्य और निश्चित घटना है। इसकी सहज स्वीकृति से भय, चिन्ता तथा विषाद से बचा जा सकता है। चिन्ता से किसी बात का समाधान नहीं निकलता है। चिन्ता जीवित इन्सान को खा जाती है। चिता मृत शरीर को जलाती है। जब भी कोई समस्या कठिनाई व दुःख आए तो शास्त्र कहते हैं-**'उपायं चिन्तयेत्'**, समस्या के समाधान का शान्त और स्थिर मन से, परस्पर मिलकर उपाय सोचो। रास्ता निकल आयेगा। चिन्तन के द्वारा ही मृत्यु का भय व चिन्ता दूर होगी। जिसे जीवात्मा और परमात्मा का तत्त्वज्ञान हो गया, वह मृत्यु से भयभीत नहीं होता है। जिसने अपने जीवन को पापों व भोगों से बिगाड़ लिया, वह मृत्यु से डरता है। जो मृत्यु की तैयारी करके शरीर को छोड़ता है, वह अन्त में दुःखी व परेशान नहीं होता है। जो विद्यार्थी अपना होमवर्क पूरा नहीं करता है, वह स्कूल जाने से डरता है। जिस व्यापारी का हिसाब-किताब ठीक नहीं होता है, वह आयकर अधिकारी से डरता है। जिस व्यक्ति ने मृत्यु की तैयारी नहीं की है, वह संसार को छोड़ते हुए डरता, रोता तथा पछताता है। मृत्यु एक गहरी सुरंग है, न जाने कहाँ ले जायेगी।

जब आदमी मृत्यु को सहज रूप में स्वीकार कर लेता है, यह मानता है कि ऐसा होना स्वाभाविक है, और होगा ही, तब वह सावधान हो जाता है और चिन्तित नहीं होता है। मृत्यु के सत्य स्वरूप को समझने के बाद इन्सान बड़े से बड़े दुःख व कष्ट से घबराता नहीं है। इसलिए इससे छूटने के उपाय सोचने तथा करने चाहिए। मृत्यु जीवन का प्रेरणा-स्रोत है। सच्चे अर्थ में जीना वही जानता है, जो मरने के स्वरूप को समझता है। जीवन की गति तथा जीवनोद्देश्य की प्राप्ति के लिए मृत्यु जरूरी है। मृत्यु ही सबको अपने दायित्व एवं कर्तव्य जल्दी-जल्दी पूरा करने के लिए प्रेरित करती है।

(क्रमशः)

thearyasamaj.org

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी-एक जीवन परिचय

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी वाणी और लेखनी के धनी हैं। उनके प्रभावशाली, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं ओजस्वी प्रवचनों ने असंख्य श्रोताओं के जीवन का कायाकल्प किया है। उनके द्वारा लिखित विद्वतापूर्ण अनेक ग्रंथ अंग्रेजी, डच, उड़िया आदि भाषाओं में अनूदित हुए है। चिन्तन की दीप्त मौलिकता, दृष्टांतो की सटीकता, शेरो-शायरी एवं काव्यात्मक उद्धरणो से युक्त बोधगम्य मनोरंजक शैली उनके लेखन की अन्यतम विशेषताएं है। जीवन के गूढतम प्रश्नों का जिस सहजता के साथ उन्होंने समाधान किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

प्रख्यात साहित्यकार आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने एकनिष्ठ भाव से देश विदेश में वैदिक धर्म एवं संस्कृति प्रचार-प्रसार हेतु नेपाल, मारीशस, ह्यूस्टन, शिकागो, न्यूयार्क, न्यूजर्सी, हॉलैण्ड, पेरिस, इण्डोनेशिया आदि देशो की यात्रा की।

श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी गहनविचारक, ऋजुदार्शनिक, सरल हृदय कवि, व्यावहारिक धर्माचार्य, वेदों के अद्भुत व्याख्याता हैं। स्वाध्यायशील चन्द्रशेखर जी वास्तव में 'शिखर' के 'चन्द' है। ''मिट गई चिन्ता सारी'' एक ऐसा महाग्रन्थ है जो कलेवर में भले ही छोटा हो परन्तु प्राणतत्व की दृष्टि से अत्यन्त गहनीय और संग्रहणीय है। चिन्ता शब्द को असंख्य मनीषियों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से देखा-परखा है। आचार्य जी ने भी अनेक वर्षो की सतत् साधना के उपरान्त अपने कुछ निष्कर्ष निकाले हैं। 'दर्शन' अत्यन्त कठिन विषय है। साधारण लोगों की समझ से बाहर परन्तु श्री चन्द्रशेखर जी ने अनेक दृष्टान्तों के माध्यम से इस कठिन विषय को इतना सरल बना दिया है कि साधारण से साधारण पाठक भी इस विषय में अपना मन रमाकर चिन्ता चाण्डालिनी के मायाजाल से मुक्त हो सकता है। जनता की भारी मांग के कारण आचार्य चन्द्रशेखर जी के लेख को हम 'कमल ज्योति' में धारावाहिक प्रकाशित कर रहे हैं।

आशा है पाठकगण! इसका भरपूर लाभ उठाकर जीवन में स्वस्थ और प्रसन्न रह सकते हैं तथा समाज और परिवार में अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए आत्मिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं।

- एल. आर. आहूजा, सम्पादक कमल ज्योति

पवित्र कमाई

एक बार गुरु नानक घूमते-घूमते उज्जयिनी नगरी में पहुंचे। एक सेठ गले में रूद्राक्ष की माला पहले और मोटे-मोटे तिलक-छापे लगाये उनके पास भोजन का थाल लेकर पहुंचा। थाल भांति-भांति के स्वादिष्ट व्यंजनों से भरा हुआ था। गुरु नानक ने सेठ की ओर देखा तथा भोजन करने से इंकार कर दिया। इतने में एक लुहार वहां पर जौ की बनी हुई दो रूखी रोटियां लेकर आया। गुरुजी ने लुहार के हाथ से उन रोटियों को बहुत प्रेमपूर्वक ग्रहण किया और स्वाद ले-लेकर खाने लगे। सेठ को आश्चर्य तो हुआ ही दुख भी कम नहीं हुआ। उसने सोचा, यह क्या हुआ। मेरे इतने कीमती और भांति-भांति के व्यंजनों की ओर तो गुरुजी ने जरा आंख उठाकर भी नहीं देखा और इस लुहार की मोटी रोटियों को ये ऐसे प्रेम से खा रहे हैं। इस लुहार की और मेरी न जाति में बराबरी है, न हैसियत में, न कीर्ति में, न मेरे और इसके भोजन में-फिर इसका कारण क्या? आखिर सेठ से नहीं रहा गया तो उसने गुरुजी से पूछा-'महाराज यह कहां का न्याय है कि मैं जो आपके लिए इस लुहार से पहले भोजन लेकर आया था और इतना स्वादिष्ट भोजन लेकर आया, उसका ओर तो आपने आंख उठाकर देखे बिना ही ग्रहण करने से इन्कार कर दिया, जबकि इस लुहार की रोटियां इतने प्रेम से खा रहे हैं।'

गुरु नानक थोड़ा मुस्कराये, फिर बोले, 'इस लुहार की कमाई अपने परिश्रम की कमाई है, सद्कमाई है, अतः पवित्र कमाई है, जबकि तेरी कमाई अपने परिश्रम की कमाई नहीं है, अतः इसे सद्कमाई नहीं कहा जा सकता।'

सेठ का चेहरा क्रोध से तमतमा गया और उसने कहा,-'आपने जो कहा उसका में प्रमाण चाहता हूं।'

गुरुजी ने कहा, 'जरा बैठो, अभी प्रमाण सामने आता है।'

फिर गुरुजी ने उस लुहार की दी हुई रोटी को दोनों हाथों से निचोड़ा तो उससे दूध की धार निकली, जबकि सेठ के 'मालपुए' को निचोड़ने पर उसमें से निकला रक्त।

सेठ का सिर शर्म से झुक गया और वह अपना थाल उठाकर वापस अपने घर चला गया। दूसरे दिन से सेठ भी अपने हाथ से सारा काम करने लगा और अपने परिश्रम से कमाने लगा।

सच है, अपने कठिन परिश्रम और गाढ़े पसीने द्वारा ईमानदारी से की हुई कमाई ही पवित्र कमाई कहलाती है और उसी की बरकत होती है।

thearyasamaj.org

मां की महिमा

- गोपाल कृष्ण

संसार का सबसे अनोखा और सबसे अद्भुत शब्द है मां। यदि संसार के सबसे प्यारे शब्दों का किसी एक शब्दकोश में चयन कर लिया जाए और उन सारे शब्दों में से अगर किसी एक शब्द का सिरमौर शब्द चुनना हो तो वह एक और अकेला शब्द है 'मां'। 'मां', जिसका जुबान से गुणगान करो तो मधुरता की सरिता बहने लगती है। किसी और के द्वारा सुनो तो कान निर्मल होते हैं। अपनी आँखों में बसाओ तो आँखों से नूर बरसता हैं। अगर दिल में उतार लो तो ममता का महासागर उमड़ने लगता है। मां तो अपने आप में एक सम्पूर्ण शब्द है, सम्पूर्ण शास्त्र है। व्रत तो ढेर सारे होते होंगे पर मां के जीवन का व्रत तप और त्याग के महत्त्व के सामने सब फीके पड़ जाया करते हैं। जिस व्यक्ति के द्वारा सुबह उठते ही माता-पिता के चरणों के दर्शन किए जाते हैं उस व्यक्ति की हर सुबह अपने आप में मंगलकारी हुआ करती है और जो सोने से पहले अपने माता-पिता की सेवा करके सोया करते हैं उस व्यक्ति का भाग्य हमेशा जाग्रत रहा करता है।

जब तक कोई व्यक्ति सुबह उठकर अपने माता-पिता को प्रणाम न करे तो उस व्यक्ति द्वारा मन्दिर में किया गया प्रणाम भी व्यर्थ हो जाया करता है और जब तक कोई व्यक्ति अपने माँ-बाप को भोजन कराए बगैर अगर पक्षियों को दाना डालता है तो उसके दानों में भी कोई दम नहीं रह जाता है। मैं पूछना चाहूंगा कि माता-पिता के चरणों का अभिषेक करना क्या किसी रूद्र अभिषेक से कम है, क्या माता-पिता के चरणों की धूल को माथे पर लगाना किसी मन्दिर के चन्दन के तिलक से कम है।

लोग कहते हैं कि पृथ्वी सहनशीला है। लोग कहते हैं कि आकाश अनन्त है और सागर अथाह है पर यह बात केवल वे लोग कहते हैं जिन्होंने माँ की सहनशीलता और माँ की ममता को नहीं देखा है।

ब्रह्माण्ड में जिसका कोई अन्त नहीं उसे आसमां कहते हैं, और संसार में जिसका कोई अन्त नहीं उसे माँ कहते हैं-जिसका कोई समापन हो ही नहीं पाता। अरे माँ तो जब तक जीवित रहती है अपनी ममता की छत्र छाया में, अपनी ममता की कल्पतरू की छाया में हम सब लोगों का वांछित पालन-पोषण करती रहती है। माँ अगर मर भी जाए तो भी देवलोक में जाकर हम पर अपने आशीर्वाद की किरणें, अपने आशीर्वादों के रक्षा कवच से हमारी रक्षा करती है।

किसी भी इन्सान पर उसके आचार्य और शिक्षक को जीवन का अगर 100 गुना ऋण चढ़ता है तो गुरु का उससे 1000 गुना ज्यादा ऋण चढ़ता है और गुरु से भी ज्यादा ऋण इन्सान पर उसके पिता का होता है। हे माँ, तुम कितनी धन्य हो कि तुम्हारा ऋण पिता से भी लाख गुना ज्यादा होता है।

अगर बच्चे का बाप छोटी उम्र में मर जाए तब भी माँ अपने बच्चे का पालन-पोषण बड़े आराम से कर लेती है चाहे उसे किसी के घर का चूल्हा-चौका ही क्यों करना पड़े।

जिसकी अपने माता-पिता के प्रति सच्ची श्रद्धा हो चुकी है उसे तो काली मां, लक्ष्मी मां, पार्वती भी विचलित नहीं कर सकती। पहले जरूरत है किसी भी इन्सान के श्रवण कुमार बनने की। तुम राम बन पाओ कि न बन पाओ, कृष्ण बन पाओ कि ना बन पाओ पर अपने जीवन में अगर श्रवण कुमार बन गए तब समझ लेना कि तुमने राम और कृष्ण के मार्ग पर चार कदम आगे बढ़ने में सफलता हासिल कर ली है।

परमात्मा को अगर अपने आप को प्रकट करना होता है परमात्मा को अगर इस धरती का सृजन करना होता है तो वह भी मां को ही माध्यम बनाता है। इस तरह वह संसार का निर्माण करता है।

माँ एक शरीर का नाम नहीं है, माँ एक पूजा है। माँ साकार ईश्वर है। मां अपने आप में एक जीवित धर्म है, एक जीवित मंदिर, एक जीवित तीर्थ है। मंदिर में प्रतिमा लगाओगे तो प्रतिमा होगी जिसका निर्माण तुम करोगे और माँ वह प्रतिमा है जिसने आप सबका निर्माण किया है। इसलिए अपने द्वारा बनाए हुए भगवान की पूजा करने की बजाए उसकी पूजा करो जिन्होंने हम सब को बनाया है।

एक बेटे का यह दायित्व होता है कि वह अपने मां-बाप की सेवा करके उनका ऋण चुकाए और एक मां-बाप का दायित्व है कि वे अपने बच्चों को ऐसे संस्कार दें कि उनका आने वाला कल बच्चों पर गर्व कर सके।

धर्म, संस्कृति एवं स्वास्थ्य की मासिक पत्रिका

कमल ज्योति

डी-796, सरस्वती विहार,
दिल्ली-110034

अपने जीवन की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए 'कमल ज्योति' पत्रिका अवश्य पढ़े और इष्ट मित्रों को भी पढ़ाएं। सदस्य बनें और बनाएं।

thearyasamaj.org

तरबूज

-सुभाषचन्द्र गुप्ता

औषधीय लाभः

रोग-सिरदर्द

सेवन विधि- यदि सिरदर्द गर्मी के कारण से हो, जैसे मरीज के सिर पर हाथ लगाने से वह गर्म प्रतीत हो या मरीज को सिरदर्द की शिकायत आग के पास बैठने या धूप में चलने-फिरने से शुरु हुई हो, तो-

(1) तरबूज का गूदा मलमल के कपड़े में डालकर निचोड़ें और रस को कांच के गिलास में भर लें। इसमें मिश्री मिलाकर प्रातः पिला दिया करें। आराम होगा।

(2) तरबूज के बीज या मगज़ लेकर उनको खरल या कुंडी आदि में डालकर और पानी मिलाकर खूब घोंटे। यहां तक कि मक्खन की तरह मुलायम लेप बन जाए। उससे मरीज के सिर पर लेप कर दें। इससे सिरदर्द का तुरन्त आराम आ जाएगा।

रोग- वहम और जनून (पागलपन)

सेवनविधि-यदि मरीज को वहम की ज्यादाती की वजह से जनून (पागलपन) का डर हो रहा हो, दिन भर तरह-तरह के विचार सताते रहते हों, नींद बहुत कम आती हो, तो नीचे लिखे हुए नुस्खे इस्तेमाल करें। इनके निरन्तर 21 दिन के प्रयोग से यह बीमारी दूर होकर रोगी ठीक हो जाता है।

(1) तरबूज के गूदे को निचोड़कर निकाला हुआ पानी 200 ग्राम, गाय का दूध 200 ग्राम, मिश्री 25 ग्राम-एक सफेद बोतल में डालकर रात को चन्द्रमा की चांदनी में किसी खूंटी आदि पर लटका दें और प्रातः खाली पेट ही रोगी को पिला दें। इस तरह 21 दिन तक पिलाते रहें। दिन प्रतिदिन वहम मिटता जाएगा।

(2) मगज तरबज 10 ग्राम रात को पानी में भिगो दें और प्रातः घोटकर उसमें 20 ग्राम मिश्री और 3 ग्राम गाय का मक्खन मिलाकर खिलाया करें। इससे वहम दूर हो जाता है। यदि चार इलायची भी मिला लें, तो बेहतर है।

रोग-कै, वमन, उलटी

सेवन विधि- (1) यदि खाना खाने के बाद कलेजा जलने लगता हो और फिर कै हो जाती हो, परन्तु कै में खाना आदि लाल रंग का होकर निकलता हो, तो उसके लिए तरबूज सर्वश्रेष्ठ चीज है। इसके लिए इलाज यह है कि प्रतिदिन 250 ग्राम तरबूज का पानी कुछ मिश्री मिलाकर पी लिया करें। आराम आ जाएगा।

(2) तरबूज पर नमक, काली मिर्च और जीरा-तीनों पीसकर छिड़कें और फिर खायें। अधिक स्वादिष्ट के अतिरिक्त यह हाजमा (पाचन) की बढ़िया दवा भी है।

रोग- प्यास की अधिकता

सेवन विधि- तरबूज का पानी निकालकर कांच का गिलास भर लें। इसमें मिश्री या शिकंजी मिलाकर पीएं। बस, अन्दर पहुंचते ही प्यास तुरन्त दूर हो जाती है। यदि प्यास की शिकायत नई हो तो दो-तीन बार में ठीक हो जाएगी। यदि पुरानी हो, तो निरन्तर सात-आठ दिन तक पिलाने से पूर्ण आराम हो जाता है।

रोग-हृदय की धड़कन।

सेवन विधि-तरबूज का गूदा (मगज) 10 ग्राम पानी में घोट-छानकर मिश्री या खाण्ड से मीठा करके दिन में दो-तीन बार पिलाएं।

रोग-कब्ज

सेवन विधि-लगातार दस दिन तरबूज खाकर देखें, कब्ज पूरी तरह मिट जाएगी।

रोग-सुजाक, प्रमोह (Gonorrhoea)

सेवन विधि-तरबूज में ऊपर से ऐसे तरीके से छेद करें कि उस छेद को निकाले हुए टुकड़े से फिर बन्द किया जा सके। अब इसमें कल्मीशोरा 5 ग्राम, मिश्री 50 ग्राम डालकर ऊपर से बन्द करके रात को चांदनी की रोशनी में रख दें और प्रातः छानकर रोगी को कांच के गिलास में डालकर पिला दें। सात दिन में सुजाक से अवश्य आराम आ जाएगा।

गर्मी का बुखार- कई बार धूप में ज्यादा चलने-फिरने से बुखार हो जाता है। इस प्रकार गर्मी के कारण यदि ज्वर हो जाए, तो दिन में दो-तीन बार रूचि अनुसार तरबूज खिलाने से बुखार उतर जाएगा।

रोग-बवासीर, अर्शरोग (Piles, Hemorrhids)

सेवन विधि-बड़ा-सा उत्तम और सख्त तरबूज लेकर उसके ऊपर से एक टुकड़ा काट लें। फिर उसमें 100 ग्राम मजीठ और 100 ग्राम बढ़िया प्रकार की मिश्री लेकर, दोनों को बारीक करके भर दें। ऊपर से वही काटा गया टुकड़ा रखकर बन्द कर दें। उस बन्द किए गए तरबूज को किसी अनाज आदि की बोरी में पन्द्रह दिन तक रख दें। पन्द्रह दिन के बाद, तरबूज में से जो पानी निकले, उसे छानकर सफेद शीशी में डालकर रख दें। इस सारे अर्क को सात दिन में पिला दें। बवासीर से अवश्य छुटकारा मिलेगा।

परहेज- रोगी को गर्म चीजें, जैसे मिर्च, लहसुन, गुड़, बैंगन इत्यादि न दें और भोजन में मूंग की दाल, फुल्का, दूध, घी आदि खाने को दें।

thearyasamaj.org

परिवार की पुकार

- निर्मला गंगल

वर्णाश्रम धर्म में व्यक्तिगत जीवन को 4 आश्रमों में बांटा गया है। गृहस्थ आश्रम सब सामाजिक कार्यो तथा व्यवस्था का प्रश्रय है। अन्य आश्रम उसी पर आश्रित हैं। वैदिक संस्कृति ने गृहस्थ आश्रम को परिवार से बांध दिया हैं हम इसी में पैदा हुए, पले तथा बढ़े हैं। इसलिए हमें इस प्रणाली की विशेषता यों ही नहीं दिखती है। अपितु यही है वह शाश्वत व्यवस्था, जिसने गये-गुजरे पराभव और पराधीनता तथा परवशता के युग में भी हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार तथा हमारी संस्कृति के ताने-बाने को बनाए रखा है।

ऋग्वेद में उद्घोष किया गया-प्रजाभिरग्ने अमृतत्त्वमश्याम्। प्रजा के प्रजनन में अमृत तत्व निहित है। आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम्। लोक में सन्तान नाम अमर रखती है। सन्तान ही विरासत की उत्तराधिकारी होती है। अंगादंगात्संभवसि हृदयादभिजायसे। सन्तान और पति-पत्नी के चारों ओर परिवार पूरा जाता है। वैदिक ग्रन्थों में पुत्र-पुत्री दोनों ही के लिए 'पुत्र' शब्द का प्रयोग किया गया है।

चाचा, बुआ-फूफा, दादा-दादी, नाना-नानी, मातुल, साले, साढू, बहनोई, श्वसुर-सास, मौसा आदि पारिभाषिक शब्द केवल संस्कृत आदि भारतीय भाषाओं में ही पाये जाते हैं। क्योंकि अपने इस रूप में परिवार भारतवर्ष में ही पनपता रहा है। पश्चिमी भाषाओं में तो इन शब्दों के अनुवाद प्राप्त है ही नहीं वहाँ Uncle-Aunt-Grand तथा In-Law शब्दों में सब रिश्ते आ जाते हैं। इन रिश्तेदारों में कोई आजीवन मधुरता व आदान-प्रदान नहीं चलता है। गीता के प्रथम अध्याय में ये शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

मनुस्मृति अध्याय 8 में श्लोक 181 से 186 तक एक रूपक इस प्रकार बांधा गया है-आचार्य ब्रह्मलोक के स्वामी हैं। पिता प्रजापति लोक के, ऋत्विज देवलोक के, भगिनी व पुत्रवधू अप्सरा लोक के, माँ व मामा भूलोक के, बालक आकाश लोक के स्वामी हैं। भ्राता पिता तुल्य तथा भार्या व सन्तान स्वशरीर के तुल्य हैं। पुत्रवधू देववधू के तुल्य, बान्धव विश्वेदेवा के समान और साले कामसुधादायक तथा शान्तिदाता हैं। परिवार शान्ति का स्थान रहा है। परिवार मनुष्य को त्यागमय बनाने का प्रथम सोपान है, जहाँ सब अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करते हैं। पर आवश्यकतानुसार फल संचित कमाई से पाते हैं। परिवार एक प्राकृतिक सहकारी संघ है। सामाजिक प्राणी होने का प्रथम पाठ व्यक्ति परिवार में ही पढ़ता है। परिवार भारतवर्ष की विशिष्ट पहचान है। इसकी प्रशंसा में वेदों में प्रशस्तियां हैं। परिवारों के वैदिक आदर्श भी हैं-

अनुव्रतः पितु पुत्रो, मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्॥
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रयाः॥
येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः।
तत् कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः॥

परिवार त्याग का शिक्षणालय है। यहाँ कम आय में गुजारा होता है। बच्चों की शिक्षा और पारिवारिक उद्योग कला की शिक्षा परिवारों द्वारा सहज ही में होती आई है। परिवार में आनन्द है, मनोरंजन है। परिवार में धार्मिक कृत्य होते हैं। परिवार संरक्षक है, क्योंकि पुत्र के रूप में बुढ़ापे की रोटी निश्चित है। परिवार स्वर्ग है।

अब परिवार को समाप्त किया जा रहा है। समाप्त जानबूझकर किया जा रहा है। बेवेल ने साम्यवाद की परिभाषा करते हुए लिखा है-

It is in reality an entire world philosophy in reliegion it is altruism, in the state a Democratic Republic, in industry a popular collectivism, in metaphysics materialism, in the home an almost loosening of family ties and the marriage bond.

एक ऐसे समाज का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें विवाह पवित्र बन्धन न होकर केवल रतिक्रिया लाभ के अन्तर्गत किया जाने वाला क्षणिक अनुबंध मात्र है। एक ऐसे प्राणी का सृजन किया जा रहा है जो कह सके।

Born in Hospital, brought up in Nursury, Educated in College, living in Hostel, how am I concerned with family?

हस्पताल में जन्म हुआ, नर्सरी में पला-बढ़ा, कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की, छात्रावास में रहा, परिवार के बारे में मुझे क्या पता?

ऐसी व्यवस्था उत्पन्न कर दी गई है, जिसमें आतिथ्य-सत्कार तथा पारिवारिक त्याग की आहुति दे दी गई। लाभ की कसौटी वाले युग में यदि कृश गाय चारा बचाने के लिए काटी जाने का तर्क मान्य है, तो वृद्ध व कृश अनुत्पादक माता-पिता की बुढ़ापे में सेवा अपने ऐश में कमी करके भी करना मूर्खता करार दी जाने लगी।

व्यावसायिक क्रान्ति, नौकरियों का केन्द्रीकरण, शहरों में घी बस्तियाँ और आंगनविहीन दो-दो कमरे के छोटे-छोटे घर, पारिवारिक नियंत्रण का विरोध, कैन्टीनों व होटलों का जाल

(शेष पृष्ठ 9 पर)

thearyasamaj.org

बच्चों में निराशा एवं तनाव को दूर करने के उपाय

शान्त एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इन्हें अपनाया जा सकता है:-

- प्रातः सोते बच्चे को उठाने की विधि-स्नेह से वास्तविक नाम से पुकारते हुए माथे पर दाएं हाथ की हथेली से सहलाते हुए।
- सोने एवं पढ़ने की दिशाएं-मानसिक शारीरिक एवं बौद्धिक स्वास्थ्य हेतु पूर्व और पश्चिम सर्वोत्तम हैं।
- पढ़ने का समय-प्रातः 4 बजे से 6 बजे, दोपहर 4 बजे से 6 बजे, रात्रि 8 बजे से 10 बजे।
- याद करने की विधियाँ-पठन स्मृति-पढ़कर याद करना, लेखन स्मृति-लिखकर याद करना, श्रवण स्मृति-कहानी या बातचीत के रूप में सुनकर याद करना, क्रियात्मक स्मृति-स्वयं अभ्यास करके याद करना।
- पढ़ाने की विधियाँ-वाणी-प्रेम से बात करके, दर्शन-सम्मान से देखकर, स्पर्श-शाबाशी से पीठ थपथपाते हुए, स्मरण-याद करते-कराते हुए।
- प्रातः बिस्तर पर भगवान का स्मरण और प्रार्थना जीवन को अनेक प्रकार की सकारात्मक सामर्थ्य से भर देती हैं। माता-पिता व वरिष्ठजनों को अभिवादन चरण स्पर्श करने से दिव्य दौलत आशीर्वाद रूप में मिलती है।
- भोजन विधि- घर में माँ और परिवार जनों द्वारा सद्भाव से बनाया भोजन प्रसन्नता पूर्वक खाने से मानसिक एवं शारीरिक विकास के साथ-साथ अनेक बुरी आदतों से भी बचाव होता है। बिस्तर पर टी.वी. या अखबार देखते-पढ़ते हुए भोजन करना अनेक कारणों से उचित नहीं है।
- क्रोध, प्रतिशोध, असत्य, दुर्व्यवहार, दिखावा, घमंड, ईर्ष्या-द्वेष यह आदतें जीवन की सुख और शान्ति को नष्ट कर देती हैं।
- स्वयं के बारे में, दूसरों के बारे में अनुचित और अनावश्यक बातें करने और सोचने से बचना चाहिए। दूसरों को गलत कहने या करने के लिए उकसाना और उकसावे में आना इन दोनों ही कार्यो से सदैव बचना चाहिए।
- पढ़ने में रूचि एवं समझ बढ़ाने के प्रयास रूचिपूर्वक धैर्य से करने पर अधिक प्रभावशाली रहते हैं।
- परीक्षा में अंक, सफलता एवं किसी वस्तु की प्राप्ति, अनैतिक प्रेम-सम्बन्ध जीवन से अधिक मूल्यवान नहीं है।।
- परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करने से माता-पिता, परिवार, शिक्षक, प्राचार्य, शिक्षा संस्थान सब प्रसन्न होंगे। अधिक अंक प्राप्त न होने पर सब घृणा और अपमान की दृष्टि से देखेंगे यह सोचना और परिवार, समाज, विद्यालय में ऐसी परिस्थिति पैदा करना उचित नहीं है।
- अधिक अंक पाने से ही सम्मान एवं अच्छे अवसर मिलेंगे, इस परिस्थिति ने कुछ छात्रों में नकल जैसी अनेक आपराधिक प्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया है।
- बच्चों में शिक्षक, प्राचार्य, विद्यालय और विद्यालय-सम्पत्ति, समाज-देश के प्रति स्नेह भाव विकसित करना आवश्यक है।
- अपनी परेशानियों का गुस्सा बच्चों पर न उतारें व अपनी अधूरी महत्वाकांक्षाओ को जबरन बच्चों पर न थोपें।
- प्रत्येक बच्चा अपने परिवार का ही चिराग नहीं है अपितु वह देश-दीपक भी है।
- जीवन में धन का बड़ा महत्त्व है लेकिन बच्चों को केवल धन कमाने के साधन के रूप में देखना और उन्हें इसीलिए विकसित करना अनुचित है।

(पृष्ठ 8 का शेष)

जहाँ घर बिना गये ही भोजन प्राप्त है। रेडीमेड भोजन व बिस्कुट, स्त्रियों का जागरण और उनमें घर छोड़कर नौकरी के लिए घर से बाहर आने की प्रवृत्ति का प्रोत्साहन, अविवाहित रहने की प्रवृत्ति, परिवार नियोजन के नाम पर भ्रूण हत्या, परिवारों का छोटा होना, क्लब-थियेटर-सिनेमाहॉल द्वारा घर के बाहर सस्ते मनोरंजन की प्राप्ति, उत्तराधिकार के नये कानून, रूपया लगाने की सुरक्षित निधियाँ, इनकम टैक्स के कानून, विवाह सम्बन्धी कानून, सिविल मैरिज, लोगों का नौकरियों के लिए दूर-दूर बसना, नौकरियों के तबादले आदि सबके सब शस्त्र परिवार को समाप्त करने पर तुले हुए हैं। अनेक देशों में तो परिवार बनने ही नहीं दिये जाते। कौन किसकी स्त्री और कौन किसका पुत्र! किसकी जायदाद और किसकी विरासत? किसका श्राद्ध व किसका तर्पण?

स्थिति यह है कि हम संक्रमण काल में हैं। यदि हमें अपनी संस्थाएं और संस्कृति तथा अपनत्व जिन्दा रखना है तो परिवार की इकाई को जीवित रखना पड़ेगा, अन्यथा विनाश ही विनाश है। सोचना पड़ेगा कि अनुदार कहलवा करके भी अपनत्व बनाये रखें या नये समाज की मृगमरीचिका में पड़कर अपनापन कुर्बान कर दें। झंझावात में पड़कर और दुःख उठाकर भी हमें चाहे वह किसी अवस्था में भी हो, परिवार प्रणाली को जीवित रखना है।

thearyasamaj.org

कबीरा गरब न कीजिये

–महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

एक बहुत साधारण, बहुत निर्धन-सा व्यक्ति था। साधारण पढ़ा लिखा भी था, परन्तु निर्धन था। नौकरी की तलाश में मुंबई पहुँचा। और तो कोई काम मिला नहीं, एक सेठजी के यहाँ झाड़ू देने पर नौकर हो गया। प्रतिदिन प्रात:काल आता, लम्बी-चौड़ी दुकान में झाड़ू देता। दिन में कई बार सफ़ाई करता और जब भी खाली समय मिलता, कोई-न-कोई किताब लेकर बैठ जाता। पढ़ता भी, लिखता भी। उसका लेख बहुत सुथरा था। सेठ ने एक दिन देखा, बोले- अरे तू लिखना जानता है?

वह बोला–जी, थोड़ा बहुत लिख लेता हूँ।

सेठ जी ने उसे चिट्ठियां लिखने पर लगा दिया। अब वह खूब परिश्रम से खूब बना- संवारकर चिट्ठियां लिखने लगा। उसके लिखने का विषय को प्रस्तुत करने का ढंग बहुत सुन्दर था। चिट्ठी में हिसाब-किताब की बात आती, तो उसे भी खूब अच्छी प्रकार समझा-बुझाकर लिखता।

सेठजी ने एक दिन ऐसा ही पत्र देखा; बोले-अरे, तू हिसाब-किताब भी जानता है?

वह बोला–जी, थोड़ा बहुत जानता हूँ।

सेठ जी ने उसे मुनीम बना दिया। फिर उसके कार्य से प्रसन्न होकर हैड-मुनीम बना दिया। अब दूसरे मुनीम जलने लगे।

जलने का यह गुण बहुत है हमारे अन्दर। किसी दूसरे व्यक्ति ने तीन-मंज़िला मकान बना लिया तो हम उसे देख-देखकर दिन-रात जलते रहते हैं, बिना आग के जलते रहते हैं। ये मुनीम भी जलने लगे। दूसरी तो कोई बात उन्हें सूझी नहीं, सोचा-सेठजी के कान भरेंगे, इसकी निन्दा करेंगे, तो नये मुनीम की पदवी छिन जायेगी, परन्तु निन्दा करने की कोई बात नहीं मिली। वह सेठ के मकान में रहता था-दो कमरों में। एक कमरा खुला रहता था, एक बन्द। प्रतिदिन जाने से पूर्व वह इस बन्द कमरे में जाता, फिर थोड़ी देर बाद बाहर निकल आता। ताला बन्द करके चाबी जेब में रखकर दुकान पर पहुँच जाता और प्रात: से रात्रि तक अपना कामकरता रहता।

जलने वालों को ऐसी बात मिली नहीं, जिसे वे सेठ जी से कहें। तभी किसी ने उसे दुकान पर आने से पूर्व इस बन्द कमरे में जाता देखा। सन्देह हुआ कि इस कमरे में क्यों जाता है? इसको बन्द क्यों रखता है?

बस, सेठजी के कान भरे जाने लगे- यह हैड-मुनीम बेईमान है, यह रूपया खा जाता है। हिसाब में गड़बड़ करता है और यह सेठजी का दिवाला निकाल देगा।

सेठजी ने सुना तो कहा–मैं इस प्रकार मानूँगा नहीं। मुझे पता है कि वह बहुत ईमानदार है। तुम लोग ईर्ष्या के कारण ऐसा कहते हो?

एक दिन बड़ा मुनीम उसी बंद कमरे में गया; अंदर पहुँचकर उसने द्वार बन्द कर लिया। दूसरे लोगों ने देखा तो दौड़े हुए सेठजी के पास पहुँचे, बोले–चलो सेठ जी! चोर पकड़ा गया। वह बेईमान मुनीम इस समय अपने चुराये हुए रूपयों को गिन रहा है। इस समय चलिये, वह रूपयों के साथ पकड़ा जायेगा।

सेठ जी तेज़ी के साथ पहुँचे। देखा सचमुच कमरे का द्वार अन्दर से बन्द है। गर्जकर बोले- 'कौन है अन्दर? दरवाज़ा खोलो!'

बड़े मुनीम ने आवाज़ दी–'मैं हूँ महाराज!'

दूसरे लोगों ने जलती आवाज में कहा– 'देखिये, हम न कहते थे।'

सेठ जी ने क्रुद्ध होकर कहा–'अन्दर क्या कर रहे हो? दरवाज़ा खोलो!'

बड़े मुनीम ने उत्तर दिया- "जी, विशेष काम तो नहीं कर रहा।"

सेठ जी गर्जे- "फिर दरवाज़ा खोलो!"

बड़े मुनीम ने कहा-"अन्नदाता! बस, थोड़ी देर ठहरिये, खोल दूँगा दरवाज़ा।"

सेठ चिल्लाए-"अभी इसी समय खोलो, नहीं तो हम दरवाज़ा तोड़ देंगे।"

बड़े मुनीम ने अन्दर से द्वार खोल दिया। सेठजी और दूसरे लोग कमरे में प्रविष्ट हुए। देखा कि वहाँ साधारण बक्स के अतिरिक्त कुछ नहीं है। सारा कमरा खाली है।

सेठ जी ने कहा–"इस सन्दूक में क्या है?"

मुनीम जल्दी से सन्दूक पर बैठ गया। हाथ जोड़कर बोला–"अन्नदाता! यह मत पूछो। सन्दूक बन्द ही रहने दो।"

दूसरे लोगों ने कहा-"इसी में तो सब कुछ है, इसीलिए खोलने नहीं देता।"

सेठ जी ने कहा-"क्या है इसमें? खोलो, हम इसे देखेंगे।"

मुनीम जी ने बैठे-बैठे कहा-"इसमें कुछ नहीं है महाराज! इसे न खुलवाइये। इसमें कोई काम की वस्तु नहीं है।"

सेठ जी ने कहा–"हट आगे से, हम देखेंगे अवश्य।"

मुनीम की आँखों में आँसू आ गये। धीरे-से उठा, एक ओर हो गया। सेठजी ने अपने हाथ से सन्दूक खोला। अन्दर देखा; आश्चर्य से पूछा-"अरे, यह क्या है?"

उसमें थी एक फटी धोती, एक मैला कुर्त्ता, एक पुराना टूटा हुआ जूता।

सब लोगों ने उन वस्तुओं को देखा। कोई भी इनका अर्थ नहीं समझ सका। बड़े मुनीम ने हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर भूमि की ओर देखते हुए कहा-"ये वस्त्र हैं, महाराज, जिन्हें पहनकर कई वर्ष पूर्व मैं इस नगर में आया था और आपकी सेवा में उपस्थित हुआ था। आपसे नौकरी देने की प्रार्थना की थी और आपने कृपा करके मुझे दुकान में झाड़ू देने की नौकरी दी थी। आपकी उस कृपा को मैं भूल न जाऊँ, अपनी वास्तविकता को मैं भूल न जाऊँ, मेरे हृदय में कभी अभिमान न जाग उठे, इसलिए प्रतिदिन प्रात:काल दुकान पर जाने से पूर्व इन वस्त्रों को देखता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि हे प्रभो! मुझे अभिमान से बचा और मुझे शक्ति दे कि मैं अपने अन्दाता की सेवा अधिक से अधिक परिश्रम और अधिक से अधिक ईमानदारी के साथ करूँ।" सेठजी ने जब यह बात सुनी तो उनकी आँखों में आँसू आ गए। आगे बढ़कर उन्होंने मुनीमजी को अपनी छाती से लगा लिया; बोले, "धन्य हो मुनीम जी ! तुम्हारी भाँति सब लोग करें, तो दुनिया से पाप का नाश हो जाय, क्योंकि अभिमान ही पाप का मूल है।

कबीरा गरब न कीजिए, उंचा देख अवास।
काल्ह परे भुईं लेटना, ऊपर जमसी घास।।

thearyasamaj.org

23वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रोहिणी, सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली का 23वां वार्षिकोत्सव बृहस्पतिवार 10 अप्रैल से रविवार 13 अप्रैल 2014 तक बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इसमें सामवेद शतकम महायज्ञ, वेदकथा, आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसके ब्रह्मा डॉ. सोमदेव शास्त्री जी (मुम्बई) थे। आर्य महिला सम्मेलन में मुख्य वक्ता सुश्री पूनम आर्या एवं सुश्री प्रवेश आर्या तथा मुख्य अतिथि श्रीमती नीलम गोयल (निगम पार्षद) थी। 11 कुण्डीय सामवेद शतकम महायज्ञ में यज्ञब्रह्मा के रूप में डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), उपाचार्य आचार्य रामकिशोर शास्त्री तथा ध्वजारोहण माता सत्यवती ओबराय एवं माता ओमारानी द्वारा सम्पन्न हुआ। वेद सम्मेलन व समापन समारोह में आशीर्वाद श्री सुखदेव आर्य तपस्वी, अध्यक्षता श्री कृष्ण चन्द्र पाहुजा, मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), ब्रह्मनिष्ठ आचार्य सत्यवीर जी तथा मुख्य अतिथि श्री भारत खण्डेलवाल जी, श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, डॉ. अनिल आर्य तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री राजेश गर्ग, श्री जयभगवान अग्रवाल, श्री ताराचन्द बंसल, श्री प्रवेश वाही, श्री रण सिंह राणा, श्री विजय आर्य, श्री गुलशन सचदेवा, श्री गुलशन नारंग एवं श्री सुरेश अनेजा उपस्थित थे। कार्यक्रम बहुत ही भव्यतापूर्ण आयोजित हुआ। कार्यक्रम उपरांत ऋषि लंगर की व्यवस्था थी जिसका सभी ने सौहार्दपूर्ण लाभ उठाया।

अथर्ववेदीय महायज्ञ तथा वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज, ए-3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली का 36वां वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य पर अथर्ववेदीय महायज्ञ तथा वेद प्रचार सप्ताह सोमवार दिनांक 21 अप्रैल से रविवार 27 अप्रैल 2014 तक आयोजित हुआ। जिसमें अथर्ववेदीय महायज्ञ, वेद कथा, आर्य महिला सम्मेलन में यज्ञ ब्रह्मा डॉ. धर्मवीर जी (प्रधान परोपकारणी सभा, अजमेर), वेद पाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा, भजन पं. जगत वर्मा (पंजाब), प्रवचन डॉ. धर्मवीर जी आर्य महिला सम्मेलन में यज्ञ ब्रह्मा श्रीमती सुलक्षणा गुप्ता जी, अध्यक्षता पूज्या आशा माता जी, भजन श्रीमती शशि प्रभा आर्या, मुख्य वक्ता डॉ. उमा शशि दुर्गा, धन्यवाद श्रीमती प्रेम छाबड़ा तथा पूर्णाहुति एवं समापन समारोह दिनांक 27 अप्रैल 2014 को सम्पन्न हुआ। सार्वजनिक सभा जिसकी अध्यक्षता श्री विजय भास्कर जी, भजन पं. जगत वर्मा जी, मुख्य वक्ता डॉ. धर्मवीर जी, विशेष उद्बोधन डॉ महावीर मीमाषंक, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, आर्शीवचन पूज्या आशा माता जी द्वारा हुए। कार्यक्रम उपरान्त ऋषि लंगर हुआ।

यज्ञ, भजन एवं वेद प्रवचन

आर्य समाज मन्दिर, रमेश नगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव पर यज्ञ, भजन एवं वेद प्रवचन बुधवार दिनांक 09 अप्रैल से शनिवार दिनांक 12 अप्रैल 2014 तक आयोजित हुए। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा पं. देवेन्द्र शास्त्री जी, भजन श्री अंकित शास्त्री जी, प्रवचन पं. ब्रह्म देव वेदालंकार जी द्वारा हुए। पूर्णाहुति दिनांक 13 अप्रैल 2014 को सम्पन्न हुई। कार्यक्रम उपरान्त ऋषि लंगर हुआ। जिसका सभी ने तन्मयतापूर्ण लाभ उठाया। उपरोक्त कार्यक्रम का संचालन प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य, मन्त्री श्री सत्यपाल नारंग, कोषाध्यक्ष श्री नरेश विग, प्रचारमन्त्री श्री सुरेश विग द्वारा सम्पन्न हुआ।

एक शाम शहीदों के नाम

आर्य समाज रानी बाग व आर्य वीर दल के संयुक्त तत्वावधान में युवा जागरण की नव प्रस्तुति एक शाम शहीदों के नाम रविवार 6 अप्रैल 2014 सायं 4 बजे, स्थान स्वामी श्रद्धानन्द पार्क, कैप्टन सतीश मार्ग, ऋषि नगर, रानी बाग, दिल्ली-34 में आयोजित हुई। उपरोक्त कार्यक्रम में आर्यवीर दल रानीबाग के संयोजक श्री वीरेन्द्र आर्य, सह संयोजक श्री धर्मवीर आर्य, सह संयोजक श्री अंकित कालड़ा, आर्य समाज मेन बाजार रानी बाग के प्रधान श्री जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री श्री यजदत्त आर्य, कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार साहनी थे।

पाठकों से निवेदन

यदि आपका 'कमल ज्योति' हेतु शुल्क अभी तक जमा नहीं हुआ है या समाप्त हो गया है तो कृपया अपना शुल्क आजीवन 1100/- रुपये की दर से 'कमल ज्योति' के नाम मनिआर्डर/क्रास चैक से कार्यालय, डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 के पते पर शीध्र भेजें ताकि पत्रिका आपको लगातार मिलती रहे। अपना नाम, निवास का पूरा पता, कोड नम्बर, फ़ोन तथा मोबाईल नम्बर आदि सुन्दर व साफ़ शब्दों में लिखने का कष्ट करें। धन्यवाद!

-प्रबन्धक

अनमोल वचन

इतिहास, पुराण सभी साक्षी हैं कि मनुष्य के संकल्प के सम्मुख देव, दानव सभी पराजित होते हैं। **-एमर्सन**

महान संकट में और जबकि आशा बहुत कम होती है तब सबसे निडर सम्मति ही सबसे बड़ी सुरक्षा है।

-लिवी

thearyasamaj.org

RNI No.DEL BIL/2008/25452 Total Pages 12 ओ३म् Posting Date 5 or 6 May 2014 DL (N)0225/2012-14

प्रेषक Date of Publication: 25 April 2014

कमल ज्योति

मई 2014 (मासिक) एक प्रति का मूल्य 10 रुपये

डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034,

फोन : 27017780

सेवा में _____

_____

_____

ऋग्वेद ॥ ओ३म् ॥ यजुर्वेद

आर्य समाज, ए-3, पश्चिम विहार

नई दिल्ली-110063, दूरभाष: 25251880

आर्य समाज की गतिविधियाँ

- दैनिक सत्संग शीतकालीन प्रात: 6.30 बजे से 7.30 बजे तक
- दैनिक सत्संग ग्रीष्मकालीन प्रात: 5.30 बजे से 6.30 बजे तक
- साप्ताहिक सत्संग प्रति रविवार शरद ऋतु में प्रात: 8 से 10 तक ग्रीष्म ऋतु में प्रात: 7.30 से 9.30 बजे तक
- आर्य महिला सत्संग प्रति बुधवार शरद ऋतु सायं 3.00 से 5.00 बजे तक ग्रीष्म ऋतु में सायं 3.30 से 5.30 बजे तक।
- आर्य धर्मार्थ होम्योपैथिक चिकित्सालय प्रात: 9 से 11 तक प्रतिदिन (बुधवार अवकाश)
- परिवारों में यज्ञ तथा संस्कार करवाने के लिए हवन कुण्ड, शुद्ध हवन सामग्री, समिधा एवं यज्ञोपवीत उपलब्ध हैं।
- विभिन्न संस्कारों एवं वेदकथा आदि पर धर्माचार्यो की सेवायें उपलब्ध हैं।
- वैदिक संस्कार आदि कार्यक्रमों के लिए आर्य समाज का भूतल (बेसमेंट) उपलब्ध है।

यजमान बनने हेतु सम्पर्क सूत्र

श्रीमती सुलक्षणा गुप्ता जी एवं मन्त्री श्री राजेन्द्र लाम्बा जी

25255024 9873677099

निवेदक

संरक्षक- हीरा लाल चावला एवं बी.एन. चौधरी

जगदीश चन्द्र नांगिया	**राजेन्द्र लाम्बा**	**योगेश मल्होत्रा**
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष
प्रेम छाबड़ा	**सुदेश कालरा**	**कमलेश गुलाटी**
प्रधाना	मन्त्रिणी	कोषाध्यक्षा

कार्यकारिणी सभा के समस्त सदस्य

सामवेद अथर्ववेद

स्वामी-माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक एल.आर. आहूजा, चलभाष : 9810454677 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष : 41548504 मो. 9810580474 से मुद्रित। **कार्यालय : डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 से प्रकाशित**